संधि

संधि का अर्थ है- मेल

MEERA P-MS

जब दो ध्वनियाँ निकट होने पर आपस में मिल जाती है और नया रूप धारण कर लेती है वहाँ दो ध्वनियों की संधि होती है। उदाहरण-

हिम+आलय

यहाँ हिम का अंतिम 'अ' तथा आलय का आरंभिक 'आ' मिलकर 'आ' बन गए हैं।

हिम+आलय =हिमालय

नर(अ) +(ई) ईश= नरेश (ए)

वन(अ) + (उ) उत्सव =वनोत्सव(ओ)

MS

संधि करना- जब दो अलग-अलग शब्दों को मिलाकर उन्हें एक शब्द बना दिया जाता है तो उसे संधि करना कहते हैं।

संधि विच्छेद - जब किसी संधि से शब्द को अलग अलग किया जाता है अर्थात संधि को खंडित किया जाता है तो उसे संधि विच्छेद कहते हैं।

उदाहरण - महात्मा =महा + आत्मा
महर्षि =महा + ऋषि

MS

संधि के भेद

संधि के निम्नलिखित तीन भेद हैं-

- स्वर संधि
- व्यंजन संधि
- विसर्ग संधि

MS

स्वर संधि

दो स्वरों के मेल से जो परिवर्तन होता है उसे स्वर संधि कहते हैं।
नील +आकाश =नीलाकाश
भाव+अर्थ =भावार्थ

स्वर संधि के पाँच भेद हैं -
दीर्घ संधि
गुण संधि
वृद्धि संधि
यण संधि
अयादि संधि

MS

दीर्घ संधि- जब ह्रस्व या दीर्घ(अ, आ, इ, ई, उ, ऊ के) आगे क्रमशः ह्रस्व या दीर्घ(अ, आ, इ, ई, उ, ऊ) आए तो दोनों मिलकर दीर्घ(आ, ई, ऊ) बन जाते हैं।

अ+अ=आ

शब्दार्थ= शब्द +अर्थ

योगाभ्यास =योग +अभ्यास

अ+आ=आ

परमानंद= परम +आनंद

योगासन =योग +आसन

आ +आ =आ

विद्यालय =विद्या +आलय

वार्तालाप =वार्ता +आलाप

MS

आ +अ=आ

विद्यार्थी= विद्या +अर्थी

परीक्षाभ्यास= परीक्षा+ अभ्यास

इ+इ=ई

रवि +इंद्र =रवींद्र

कवि+इच्छा =कवीच्छा

इ+ई=ई

गिरि+ईश= गिरीश

परि+ ईक्षा= परीक्षा

ई+ई=ई

सतीश= सती +ईश

नदीश= नदी+ ईश

ई+इ=ई

नदींद्र=नदी+इंद्र

योगींद्र=योगी+इंद्र

MS

उ+उ=ऊ
लघु+ उत्तर =लघूत्तर
गुरु + उपदेश =गुरूपदेश

उ+ऊ=ऊ
लघु +ऊर्मि=लघूर्मि
अंबु+ऊर्मि= अंबूर्मि

ऊ+उ=ऊ
वधू+ उत्सव =वधूत्सव

ऊ+ऊ=ऊ
भू+ ऊर्जा=भूर्जा

MS

गुण संधि

यदि'अ' या 'आ' के आगे 'इ' या' ई' आए तो दोनों के मिलने से 'ए'बनता है।

यदि'अ' या 'आ' के आगे 'उ' या' ऊ' आए तो दोनों के मिलने से 'ओ'बनता है।

आगे 'ऋ' आए तो दोनों के मिलने से 'अर्'बनता है।

अ+इ=ए

देवेंद्र= देव +इंद्र

स्वेच्छा =स्व+ इच्छा

शुभेच्छा = शुभ + इच्छा

लोकेंद्र =लोक +इंद्र

MS

अ+ई=ए

परमेश्वर =परम +ईश्वर

गणेश =गण +ईश

रामेश्वर =राम +ईश्वर

दिनेश =दिन +ईश

आ+इ=ए

महेंद्र= महा +इंद्र

राजेंद्र =राजा +इंद्र

यथेष्ट =यथा+ इष्ट

रमेंद्र =रमा +इंद्र

MS

आ+ई=ए
महेश= महा+ ईश
लंकेश =लंका+ ईश
रमेश =रमा +ईश
महेश्वर =महा +ईश्वर

अ+उ=ओ
चंद्रोदय =चंद्र+ उदय
परोपकार =पर+ उपकार
सर्वोत्तम =सर्व+ उत्तम
गणेशोत्सव= गणेश +उत्सव

MS

अ+ऊ=ओ
सूर्योष्मा=सूर्य +ऊष्मा
सागरोर्मि= सागर +ऊर्मि
सूर्योर्जा= सूर्य +ऊर्जा
जलोर्मि =जल+ऊर्मि

आ+उ=ओ
महोत्सव =महा+ उत्सव
गंगोदक= गंगा +उदक
महोदधि =महा+ उदधि
महोदय =महा+ उदय

MS

आ+ऊ=ओ
गंगोर्मि=गंगा +ऊर्मि
महोर्मि=महा+ऊर्मि

अ+ऋ=अर्
सप्तर्षि= सप्त+ ऋषि
देवर्षि =देव +ऋषि

आ+ऋ=अर्
राजा+ ऋषि= राजर्षि
ब्रह्मा+ऋषि=ब्रह्मर्षि

MS

वृद्धि संधि

यदि के अ/आ बाद ए /ऐ हो तो दोनों मिलकर ऐ हो जाते हैं।
यदि अ/आ के बाद ओ/औ हो तो दोनों मिलकर औ हो जाते हैं।

अ+ए=ऐ

एकैक=एक+एक

धनैषणा=धन+एषणा

आ+ए=ऐ

सदैव =सदा +एव

तथैव=तथा+एव

अ+ऐ=ऐ

भावैक्य=भाव+ऐक्य

मतैक्य =मत+ऐक्य

MS

आ+ऐ=ऐ

मातैश्वर्य=माता +ऐश्वर्य

महैश्वर्य=महा+ऐश्वर्य

अ+ओ=औ

वन+ओषधि =वनौषधि

दंत+ओष्ठ=दंतौष्ठ

आ+ओ=औ

महा+ओजस्वी =महौजस्वी

MS

अ+औ=औ
परम+औषध=परमौषध
वीर+औदार्य=वीरौदार्य

आ+औ=औ
महा+औषध=महौषध
विद्या+औत्सुक्य=विद्यौत्सुक्य

MS

यण संधि

यदि इ/ई के बाद कोई भिन्न स्वर आए तो इ/ई का य् हो जाता है।
यदि उ/ऊ के बाद कोई भिन्न स्वर आए तो उ/ऊ का व् हो जाता है।
यदि ऋ के बाद कोई भिन्न स्वर आए तो ऋ का र् हो जाता है।

इ+अ=य

अत्यधिक=अति+अधिक

प्रत्यक्षर=प्रति+अक्षर

अत्यंत= अति +अंत

यद्यपि= यदि+ अपि

इ+आ=या

अत्याचार=अति+आचार

व्यायाम=वि+आयाम

इत्यादि=इति+आदि

अत्यावश्यक=अति+आवश्यक

MS

ई+अ=य
नद्यर्पण =नदी+अर्पण
देव्यर्पण=देवी +अर्पण
ई+आ=या
देव्यालय=देवी +आलय
सख्यागमन=सखी+आगमन
इ+उ=यु
अत्युत्तम=अति+उत्तम
प्रत्युपकार =प्रति+उपकार
उ+अ=व
स्वच्छ =सु+अच्छ
स्वस्ति=सु+अस्ति
उ+आ=वा
स्वागत = सु+आगत
ऋ+अ=र
पित्रनुमति=पितृ+ अनुमति
ऋ+आ=रा
मात्राज्ञा =मातृ+ आज्ञा
पित्रानंद=पितृ+ आनंद

MS

अयादि संधि

यदि ए, ऐ, ओ, औ से आगे इनसे भिन्न स्वर आ जाए तो ए का अय्, ऐ का आय्, ओ का अव् तथा औ का आव् बन जाता है।

ए+अ=अय
नयन=ने +अन
शयन=शे+अन
ऐ+अ=आय
गायक=गै+अक
नायक =नै+अक
ओ+अ=अव
भवन =भो+अन
पवन=पो+अन

ओ+इ=अवि
भविष्य =भो+इष्य
पवित्र=पो+इत्र
औ+अ=आव
पावन=पौ+अन
पावक =पौ+अक
औ+इ=आवि
नाविक=नौ+इक
औ+उ=आवु
भावुक=भौ+उक

MS